

Goldsworthy, chap. 19

**THE HERMENEUTICS OF CHRIST**

---

---

---

---

---

---

---

---

**PREVIEW**

- ✘ Hermeneutics of the Person of Christ
- ✘ Hermeneutics of the Work of Christ
- ✘ Hermeneutics of the Glorification of Christ
- ✘ Hermeneutics of the Spirit of Christ

---

---

---

---

---

---

---

---

**HERMENEUTICS OF THE PERSON OF CHRIST**

---

---

---

---

---

---

---

---

### PERSON OF CHRIST

- ✘ Four Christological Errors
  - + **Ebionism**: humanity without divinity
  - + **Docetism**: divinity without humanity
  - + **Apollinarianism**: divinity diminishes humanity (i.e., the divine Spirit replaces the human spirit)
  - + **Nestorianism**: divinity *plus* humanity (i.e., two persons, two natures, moral unity only)
- ✘ These can manifest themselves in *analogous* errors about the nature of Scripture.

---

---

---

---

---

---

---

---

### HERMENEUTICS OF THE WORK OF CHRIST

---

---

---

---

---

---

---

---

### WORK OF CHRIST

- ✘ OT promissory nature → Jesus as the fulfiller who draws together all themes and motifs of the OT
- ✘ OT has humanity at pinnacle of creation → new creation accomplished in the “last Adam”
- ✘ “The work of Christ should be the magnet that draws our interpretative application of all texts to the gospel” (304).
- ✘ Incarnation demands that the humanity of Scripture be taken seriously.

---

---

---

---

---

---

---

---

**HERMENEUTICS OF THE GLORIFICATION OF CHRIST**

---

---

---

---

---

---

---

---

**GLORIFICATION OF CHRIST**

- ✘ Jesus' resurrection → paradigm of our own resurrection
- ✘ The resurrected Christ provides the hermeneutical key to all of Scripture (Luke 24)
- ✘ The ascension demands...
  - + A missionary role of the Church
  - + A hermeneutic of the lordship of Jesus Christ:
    - ✘ Jesus Christ rules in the world through the gospel as it's preached (306).
    - ✘ We preach and teach to "take every thought captive to obey Christ" (2 Cor 10:5).

---

---

---

---

---

---

---

---

**HERMENEUTICS OF THE SPIRIT OF CHRIST**

---

---

---

---

---

---

---

---

### SPIRIT OF CHRIST

- ✦ The Holy Spirit guarantees that the human authors achieved God's purposes for their writing.
- ✦ The Spirit is necessary if preaching the Word is to become a demonstration of the Spirit and power (1 Cor 2:4-5).
- ✦ It is the Spirit's regenerating and illuminating work that guarantees the Scriptures achieve God's purpose in readers/hearers.

---

---

---

---

---

---

---

See Goldsworthy, *Gospel-Centered Hermeneutics*, 308-12

### "HAND'S-ON HERMENEUTICS"

---

---

---

---

---

---

---